P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-4* July- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वर्तमान परिवेश में मुरिया जनजातीय महिलाओं की स्थिति

The Situation of Muria Tribal Women in the Present Environment

Paper Submission: 10/07/2021, Date of Acceptance: 23/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

सुकृता तिर्की
सहायक प्राध्यापक,
मानव विज्ञान एवं जनजातीय अध्ययनशाला विभाग,
बस्तर विश्वविद्यालय,
जगदलपुर, छ.ग., भारत

सारांश

जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका बेहद अहम होती है। वे परिवार व समाज की धुरी होती है। जनजातीय समाज में लिंगानुपात में महिलाओं की स्थिति पुरूषों से सदैव बेहतर रही है। मुरिया समाज की महिलायें पूर्व में पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में अधिक सक्रिय रही है, किन्तु वर्तमान में बदलते परिवेश, विकासीय प्रयासों के प्रभाव, नीतिगत बदलाव के कारण न सिर्फ अपने समाज वरन् बाहरी समाज में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। जो न सिर्फ मुरिया समाज वरन् राज्य तथा देश के उज्जवल भविष्य के लिए सुखद संदेश है।

The role of women in tribal society is very important. They are the backbone of the family and society. The position of women has always been better than men in tribal society in terms of sex ratio. The women of Muria society have been more active in the family, economic, social field in the past, but due to the changing environment, the impact of developmental efforts, policy changes, they are making a remarkable presence not only in their own society but also in the outside society. Which is a happy message not only for the Muria society but also for the bright future of the state and the country.

मुख्य शब्द: जनजातीय महिला, मुरिया समाज, महिला सशक्तिकरण, अर्थिक स्वावलम्बन।

Tribal Women, Muria Society, Women Empowerment, Economic Self-Reliance.

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के पुरोधा देश के प्रथम प्रधानमंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू का अभिमत था कि– एक सशक्त समाज का निर्माण करने के लिए महिलाओं को सशक्त व स्वस्थ्य बनाना बेहद जरूरी है तभी एक सभ्य समाज का निर्माण हो पाएगा। वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिये अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का कियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढंग से न हो पाने के कारण स्त्रियों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है। यह सत्य है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आये हैं। स्त्रियों को अपनी जिंदगी का ख्याल तो रखना ही पड़ता है, साथ में पूरे परिवार का ध्यान भी रखना है। वह पूरी जिन्दगी बेटी, बहन, पत्नी, मॉ ,सास और दादी जैसे रिश्तो को ईमानदारी से निभाती है। इन सभी रिश्तो को निभाने के बाद भी वह पूरी शाक्ति से नौकरी करती है ताकि अपने .परिवार का भविष्य उज्जवल बना सके । इस पुरूष प्रधान समाज में आज भी स्त्रियों को सम्मानजनक स्थान नहीं दिया जाता है चाहे वह बाहर जाकर पैसे कमाए या घर में चौबीसो घटें काम करें।

साहित्यावलोकन

शालिनी तिवारी (2017) लिखित "भारतीय महिलाओं की दिशा एवं दशा" नामक पुस्तक में उल्लेख है कि पुरूष प्रधान रूढ़िवादी समाज में महिलाएँ निश्चित रूप से भविष्य के स्वर्णिम भारत की नींव मजबूत करने का हर संभव प्रयास कर रही है, जो काबिले तारीफ है। भले ही कुछ जगह महिलाएँ अब भी घर की चारदीवारी में कैद होकर रूढ़िवादी परम्पराओं का बोझ ढो रही है। वजह साफ है, पुरूष प्रधान समाज का महज संकुचित मानसिकता में बंधे होना। जयति गोयल (2013) द्वारा "आज के परिवेश में नारी" नामक पुस्तक में कहा गया है कि गांव देहात में रहने वाले महिलाओं के उत्थान के बिना महिला समाज का सर्वांगीण विकास हो ही नहीं सकता, उन्होंने सारे देश में हो रहे महिला उत्पीड़न

के आंकड़े देकर यह सिद्ध किया है कि असुरक्षा का भय प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। जिस देश मे लगभग तीन चौथाई आबादी गांव मे बसी हो और कृषि ही अर्थ–व्यवस्था का मुख्य आधार हो। उस देश में ग्रामीण विकास के बिना राष्ट्र के विकास की कल्पना भी कैसे संभव है। इस संदर्भ में युगनायक स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है कि– "किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहां की महिलाओं की स्थिति।" हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए जहां वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मुरिया जनजाति की महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य की स्थिति का अध्ययन करना।
2. मुरिया महिलाओं में वर्तमान परिवेश की स्थिति को प्रस्तुत करना।

अध्ययन क्षेत्र एवं शोध प्रविधि

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के जिला–बस्तर, विकास खण्ड– लोहण्डीगुड़ा, ग्राम–कोठियागुड़ा का चयन किया गया। जो जिला मुख्यालय, जगदलपुर से 35 कि.मी. की दूरी पर पश्चिम दिशा की ओर स्थित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित अध्ययन हेतु ग्राम का चयन उददेश्य मूलक प्रविधि के द्वारा किया तथा चयनित 50 परिवारों का चयन दैव निर्देशन पद्धति के द्वारा किया गया। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु तैयार उपकरण अनुसूची का प्रयोग किया गया। जिसके साथ अर्द्धसहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, एवं समूह चर्चा, प्रविधियों का उपयोग किया गया है। शासकीय एवं अर्धशासकीय संस्था के अनुसंधान प्रतिवेदन, शोध प्रबंधन, मुरिया जनजाति पर आधारित ग्रन्थ एवं संबंधित पुस्तकें, इंटरनेट इलेक्ट्रॉनिक स्त्रोत इत्यादि से द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया।

मुरिया जनजाति का परिचय

मुरिया जनजाति मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में निवास करती है। यहाँ पर इन्हें तीन प्रकार के उप–समाजों में देखा जा सकता है– राजा मुरिया, गोटुल मुरिया एवं झोरिया मुरिया। इनमें से राजा मुरिया जिला मुख्यालय के निकटवर्ती क्षेत्रों में बसे हुए है। तथा इनका सम्पर्क तात्कालीन राजा से होने के कारण इन्हें राजा मुरिया कहा जाता है। और ये लोग तात्कालीन राजा के विश्वस्त समुदाय के माने जाते थे। गोटुल मुरिया नाराणपुर एवं झोरिया मुरिया कोण्डागांव जिले में निवासरत् है। गोटुल मुरिया अपनी गोटुल परम्परा के कारण गोटुल मुरिया कहे जाते है। जबकि झोरिया मुरिया स्थानीक और समाजगत् विशिष्टिताओं के चलते झोरिया मुरिया कहे जाते है। मुरिया संबोधन का अर्थ "मूल निवासी" होता है। इनकी मुख्य बोली "गोंडी" है। जो द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित है। ज्ञात हो कि गोंडी शब्द मूलतः "कोयतोर" या "कोया" के स्थान पर प्रयुक्त होता है।

परिणाम एवं विश्लेषण

किसी भी देश के विकास के लिए वहाँ के समस्त परिवारों को शिक्षित एवं समझदार होना अति आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि स्त्रियां, परिवार और समाज के जीवनतंत्र की दिशा निर्धारित करती है। वे शैशव को युवा–पीढ़ी के रूप में दीक्षित करती है। और उनके इस महत्वपूर्ण योगदान पर समाज की उन्नति या अवनति निर्भर करती है। संसार में ऐसा कोई समाज नहीं है जो प्रगतिशील समाज कहलाने और स्वस्थ्य समाज के रूप में स्थापित होने के लिये स्त्रियों के लिये महत्वपूर्ण अवदान पर निर्भर न हो।

निम्नांकित तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित मुरिया स्त्रियों की स्थिति क्या है–

सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

तालिका क.1 महिला एवं पुरूष का विवरण

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	पुरूष	124	48.44%
2	महिला	132	51.56%
योग		**256**	**100%**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवारों में स्त्री–पुरूष की जनसंख्या 256 पाया गया। जिनमें पुरूषों की संख्या 124 एवं महिलाओं की संख्या 132 पायी गई।

चयनित परिवार में सर्वाधिक 49.21% अविवाहित, एवं 42.57% विवाहित पाये गये। जबकि न्यूनतम 02.34% विधुर पाये गये।

तालिका क. 2 सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी का विवरण

क्र	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	13	26%
2	नहीं	37	74%
योग		50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान में चयनित महिलाओं का 74% हिस्सा सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका नकारात्मक पक्ष को दर्शाती है। जबकि 26% महिलाएँ अपने सामाजिक निर्णयों में सक्रिय भागीदारी का निर्वहन करती है।

तालिका क. 3 जीवन साथी चुनने में स्वेक्षित निर्णय का विवरण

क्रं.	विवरण	प्रतिशत
1	हाँ	84%
2	नही	16%
योग		100%

तालिका से स्पष्ट है कि चयनित महिलाओं में युवतियाँ स्वेक्षिक निर्णय लेकर विवाह करने के लिये स्वतंत्र है जबकि 16% युवतियाँ इस संबंध में पारिवारिक निर्णय को प्रभावशील मानती है।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि सत–प्रतिशत युवतियाँ एवं महिलाएँ वैवाहिक आयोजन में विशेषकर बारात के प्रस्थान के समय में सक्रिय भूमिका एवं सहभागिता का अधिकार रखती है।

तालिका क्र 4 विधवा या परित्यागता विवाह का विवरण

क्र	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	43	86%
2	नही	07	14%
योग		50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित मुरिया समाज में विधवा अथवा परित्यक्ता के पुनर्विवाह का कोई संकट नहीं है। वे अपनी सुविधानुसार अपनी जीवन साथी का चयन, परित्याग और पुर्नचयन कर सकते है।

तालिका क्र. 5 विवाह पूर्व सम्बन्ध बनाने पर सजा की आवृत्ति का विवरण

क्र	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	समान अनुपात	46	92%
2	अलग.अलग	04	8%
योग		**50**	**100%**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मुरिया समाज में विवाह पूर्व संबंध बनाने पर सभी महिला को समान अनुपात में सजा दी जाती है। जबकि 8% परिवार सजा की मात्रा में असमता का उल्लेख भी करते है।

तालिका क्र.6 दैनिक जीवन में महिला द्वारा अनुमति लेने की आवश्यकता का विवरण

क्रं.	विवरण	हॉ	प्रतिशत	नही	प्रतिषत	योग	प्रतिशत
1	बाजार जाने के लिए	16	32%	34	68%	50	100%
2	पिता (मायके) के घर जाने के लिए	40	80%	10	20%	50	100%
3	घर से बाहर जानेके लिए	18	36%	32	64%	50	100%
4	सामाजिक समारोह मे सम्मिलित होने के लिए	12	24%	38	76%	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवार की अधिकांश महिलाओं को बजार जाने के लिये पारिवारिक अनुमति की आवश्यकता नहीं होती। जबकि मायके जाने के लिये अपने परिजनों की अनुमति आपेक्षित होती है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को घर से बाहर जाने के लिये निषेधों का पालन नहीं करना पड़ता। तथा सामाजिक समारोह में सम्मिलित होने के लिये भी उन्हें पारिवारिक पूर्वानुमति की आवश्यकता नहीं होती।

आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

तालिका क्र.7 आय के स्त्रोत का विवरण

क्र	आय के स्त्रोत	परिवारो की संख्या	प्रतिशत
1	कृषि+मजदूरी	23	46%
2	कृषि +मजदूरी+अन्य	24	48%
3	सरकारी नौकरी + कृषि	1	2%
4	सरकारी नौकरी + कृषि + अन्य	2	4%
योग		50	100%

तालिका क्र. 8

अध्ययन में सम्मिलित परिवार में घरेलु काम में महिलाओ एवं पुरूषो के कार्य का विभाजन का विवरण

क्रं.	विवरण	महिलाओं की भागीदारी	पुरूषो की भागीदारी
1	लकड़ी काटना	√	√
2	खाना बनाना	√	x
3	बर्तन साफ	√	x
4	घर की साफ–सफाई	√	x
5	बच्चो की देखभाल	√	√
6	कपड़े सिलाई	√	x
7	ईधन संग्रह	√	x
8	चारा संग्रह	√	x
9	कपड़े धोना	√	x
10	पानी भरना	√	x
11	जाता चलाना	√	x
12	तेल निकालना	√	√

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि चयनित परिवारों में लकड़ी काटना, बच्चों की देखभाल एवं तेल निकालना स्त्री एवं पुरूष दोनों की भूमिका समान है जबकि शेष सभी कार्य के निर्वहन में सिर्फ महिलाओं की भूमिका पायी गई।

तालिका क. 9

परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में महिलाओं की भूमिका का विवरण

कं.	निर्णय	विवरण				योग	
		हाँ	प्रतिशत	नही	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	जमीन.जायदाद खरीदते समय	15	30%	35	70%	50	100%
2	सामाजिक कार्यों में खर्च	10	20%	40	80%	50	100%
3	लोन लेते समय	6	12%	44	88%	50	100%
4	घर के आर्थिक नियंत्रण हेतु	20	40%	30	60%	50	100%
5	स्वयं द्वारा कमाई गई धन राशि का खर्च	5	10%	45	90%	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवार में जमीन जायदाद खरीदते समय, सामाजिक कार्यों में खर्च, लोन लेते समय, घर के आर्थिक नियंत्रण हेतु एवं स्वयं द्वारा धन का खर्च इन सभी निर्णय में स्त्रियों की भूमिका कमजोर है। कथनाशय यह है कि सभी निर्णयों में पुरूषों का अधिपत्य स्थापित है।

तालिका क .10

आर्थिक कार्य में महिलाओं की भूमिका का विवरण

कं.	विवरण	हाँ	%	नही	%	योग	%
1	मछली पकडने	9	18%	41	82%	50	100%
2	शिकार करना	4	8%	46	92%	50	100%
3	बाजार–हाट जाना	30	60%	20	40%	50	100%
4	घर के सामान खरीदना	43	86%	07	14%	50	100%
5	पेड़ काटना	4	8%	46	92%	50	100%
6	संग्रह करना	32	64%	18	36%	50	100%
7	संदेश भेजना	5	10%	45	90%	50	100%
8	टोकरी बनाना	44	88%	06	12%	50	100%
9	जानवर चराना	22	44%	28	56%	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवारों में बजार–हाट, जाना घर के सामान खरीदना, संग्रह करना व टोकरी बानाना इसमें स्त्रियों भूमिका महत्वपूर्ण है जबकि शेष सभी गतिविधियों में पुरूषों का हस्तक्षेप अधिक है।

तालिका क .11

कृषि संम्बन्धी कार्य में महिलाओं की भूमिका का विवरण

कं.	विवरण	हॉ	प्रतिशत	नही	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	हल चलाने मे	2	4%	48	96%	50	100%
2	फसल बोआई मे	2	4%	48	96%	50	100%
3	निदाई करने मे	39	78%	11	22%	50	100%
4	कटाई में	40	80%	10	20%	50	100%
5	धान मिंजाई	04	8%	46	92%	50	100%
6	बेचने के लिए जाने मे	48	96%	2	2%	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवार में निंदाई करने, कटाई व फसल बेचने में महिलाओं की सक्रिय भूमिका पाई गई है। जबकि हल चलाने, फसल बोवाई एवं धान मिंजाई आदि में पुरूषों का अधिपत्य है।

तालिका क .12

पेय पदार्थो के सेवन का सम्बन्धी विवरण

क	विवरण	हॉ	प्रतिशत	नही	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	लांदा(राईस बीयर)	37	74%	13	26%	50	100%
2	महुआ	18	36%	32	64%	50	100%
3	सल्फी	21	42%	29	58 %	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवार में लांदा का सेवन अधिकांशतः किया जाता है। जबकि महुए की शराब एवं सल्फी के सेवन में महिलाओं का प्रतिशत कम पाया गया।

राजनैतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

तालिका क्र.13 परम्परागत पंचायत में महिलाओ की भूमिका का विवरण

क्र.	विवरण	हॉ	प्रतिशत	नही	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	मुखिया	1	2%	49	98%	50	100%
2	पंचायत के पंच	2	4%	48	96%	50	100%
3	ग्राम पंचयात के सदस्य	50	100%	0	0	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवारों में जातिगत पंचायत में स्त्रियों की भूमिका नगण्य है और यह पुरूषों का वर्चस्व का स्थान है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पदाधिकारी के रूप में महिलाओं का प्रतिशत भले ही कम हो किन्तु जातीय पंचायत में सम्मिलित सामान्य नागरिकों के रूप में उन पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

धार्मिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि चयनित परिवारों में महिलाएँ समाज के किसी भी धार्मिक पदों में आसीन नहीं पाये गये। अर्थात् इन सामाजिक पदों का निर्वहन पुरूषों के द्वारा किया जाता है। धार्मिक क्षेत्र में महिलओं की भूमिका शून्य है। वे पुजारी, गायता, गुनिया एवं बैगा के पद पर कार्य नहीं कर सकती है।

तालिका क्र .14 महिलाओं का धार्मिक स्थलों में प्रवेश की अनुमति का विवरण

क्रं.	विवरण	हॉ	प्रतिशत	नही	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	ग्राम के मंदिर में	40	80	10	20	50	100%
2	गोत्र देवी देवता का स्थल	50	100	0	00	50	100%

उपरोक्त तालिक से स्पष्ट है कि चयनित परिवार में महिलाओ का धार्मिक स्थलों में प्रवेश मासिक धर्म के दिनों को छोड़कर अन्य दिनों में प्रवेश की अनुमति पायी गई है।

शैक्षणिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका तालिका क्र. 15 शैक्षणिक स्थिति का विवरण

क्रं.	शिक्षा	विवरण				योग	
		महिला		पुरूष			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	पूर्व स्कूल गामी	14	10.61%	17	13.71%	31	12.11%
2	प्राइमरी	25	18.94%	23	18.55%	48	18.75%
3	माध्यमिक	15	11.36%	18	14.52%	33	12.89%
4	हाईस्कूल	13	9.85%	15	12.09%	28	10.94%
5	हायर सेकेंडरी	12	9.09%	11	8.87%	23	8.98%
6	स्नातक से अधिक	10	7.57%	8	6.45%	18	7.03%
7	अशिक्षित	43	32.58%	32	25.81%	75	29.30%
योग		132	100%	124	100%	256	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवारों के शिक्षा में प्राइमरी, हायर सेकेण्डरी एवं स्नातक से अधिक स्तर पर महिलाओं का प्रतिशत अधिक पाया गया। जबकि पूर्व स्कूलगामी, माध्यमिक व हाई स्कूल में पुरूषों का प्रतिशत अधिक पाया गया। मुख्य बात यह है कि अशिक्षा में भी स्त्रियों का प्रतिशत पुरूषों से अधिक है। स्पष्ट होता है कि मुरिया समाज में शिक्षा का स्तर धीरे–धीरे बढ़ रहा है।

तालिका क्र .16

सर्वेक्षित परिवार में शिक्षित/अशिक्षित महिलाओं का विवरण

क्र	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	शिक्षित	84	71.18%
2	अशिक्षित	34	28.81%
योग		**118**	**100%**

पूर्व स्कूलगामी (0–5 वर्ष) 14 को छोड़कर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवार में 71.18% शिक्षित महिलाएं पायी गए। जबकि न्यूनतम 28.81% महिलाएँ अशिक्षित पायी गई। इससे यह

स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

तालिका क्र. 17 बीमार होंने पर उपचार की स्थिति का विवरण

क्रं.	विवरण	संख्या	प्रतिषत
1	घरेलु	10	20%
2	घरेलु +बैगा	14	28%
3	बैगा	12	24%
4	स्वास्थ्य केन्द्र	9	18%
5	उपरोक्त सभी	5	10%
योग		**50**	**100%**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवार में घरेलू एवं बैगा द्वारा 48% महिलाएँ बीमार होने पर उपचार कराती है। जबकि शेष 18% महिलाएँ स्वास्थ्य केन्द्र जाकर उपचार कराती हे।

तालिका क. 18
महिलाओ के उपचार में निर्णय का विवरण

क्रं.	विवरण	हाँ	प्रतिशत	नही	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	स्वयं	20	40%	30	60%	50	100%
2	परिवार के सदस्य	40	80%	10	20%	50	100%
3	रिस्तेदार	10	20%	40	80%	50	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि चयनित परिवारों में महिलाओं को बीमार होने पर उपचार संबंधी निर्णयों में स्वयं के निर्णय एवं रिस्तेदार के निर्णय कम पाये गये। जबकि परिवार के सदस्यों के निर्णय अधिक पाये गये।

महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन

सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन

समाज के सामाजिक कार्यक्रमों में महिलाओं की भूमिका पहले ना के बराबर होती थी जैसे महिलाएं अपने पसंद से ना तो अपना जीवन साथी चुन सकती थी न ही वे किसी सामाजिक निर्णय का हिस्सा हो सकती थी। किन्तु वर्तमान में सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की सहमति ली जाती है। उनसे सुझाव भी लिया जाता है। तथा महत्वपूर्ण निर्णयों में उनसे रायशुमाारी की जाती है। वर्तमान में महिलाओं के निर्णय को भी समाज का अहम हिस्सा माना जा रहा है।

आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन

प्रारंभ में मुरिया जनजाति महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। महिलाओं को सम्पति में कोई अधिकार नहीं होता था। बालिकाओं को बचपन से ही पराया धन माना जाता था। किन्तु आज सरकार के विभिन्न योजनाओं के बलबूते बालिकाएँ पढ़–लिखकर शहर की ओर प्रवेश कर चुकी है। वे विभिन्न विभाग में अपनी भूमिका निभा रही है और पैसे कमा कर अपने परिवार की आर्थिक संबल बन रही है। इस समुदाय की शासकीय सेवा की अतिरिक्त स्वःसहायता समुह जैसे उद्यमों में भी सलग्न है। महिलाएँ जितनी आर्थिक रूप से सशक्त होंगी उतनी ही उनकी निर्णय क्षमता बढ़ेगी और वे परिवार, समाज व देश के विकास में सहयोगी बन पाएंगी। उल्लेखनीय है कि आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ देश की समृद्धि का स्त्रोत सिद्ध होगी। तथा आर्थिक स्वालम्बन उनकी निर्णय की क्षमता में वृद्धि करेगा।

धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन

मुरिया जनजातीय महिलाओं में धार्मिक क्षेत्र में स्त्रियों की दशा में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया है। क्योंकि आज भी महिलाएँ पूर्व की भांति मासिक धर्म के दौरान पूजा में सम्मिलित नहीं हो सकती है। तथा कोई भी महिलाएँ धार्मिक पदों पर आसिन नहीं पाई गई है। आज भी महिलाएँ मासिक धर्म के दौरान किचन में जाकर खाना नहीं बना सकती है। किन्तु जो मुरिया जनजातीय महिलाएँ शहर में प्रवेश कर चुकी है तथा उनमें परिवर्तन के संकेत कालान्तर में दिखाई देंगे।

राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन

समाज में महिलाओं को सिर्फ घरेलु कार्य के लिए बाध्य किया जाता था, उनको इस योग्य नही समझा जाता था कि वे सामाजिक तथा राजनैतिक मामलो में अपने सुझाव–निर्णय देने के काबिल है। इस वजह से उनको इन सब चीजो से दूर रखा जाता था। जो भी फैसला पुरुष मुखिया लेते थे उनको महिलाओं को मानने के लिए बाध्य होना पड़ता था। चाहे वह महिलाओं के लिए अमानवीय हो या क्रूर हो। महिलाएं किसी भी प्रकार के निर्णयों में दखल नहीं दे सकती थी। उनकों राजनीति से जुड़ी बातों का ज्ञान भी नहीं हुआ करता था। परन्तु अब लोगों कों योजनाओं अभियानों तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार से यह समझ आने लगा है कि महिलाएं भी समाज की एक अहम हिस्सा है, उनके भी मौलिक अधिकार है। उनकी भलाई में उनकी खुशी में गांव–घर परिवार की खुशहाली है। और अब ये भी माना जाने लगा है कि महिलाएं बौद्धिक क्षमता में पुरूष से आगे होती है उनकी सामाजिक उलझनों में परेशानियों को सुलझाने में बेहतर निर्णय से गांव समाज आगे बढ़ेगा न्याय व्यवस्था होगी।

हमारे अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि जातिगत पंचायतों के संबंध में स्त्रियों की भूमिका भले ही नगण्य हो किन्तु संवैधानिक दृष्टि से स्थापित की गई पंचायतों में सभी प्रकार के पदों में महिलाओं की 30% भागीदारी अनिवार्य हो गयी है। अतः यह महिलाओं के राजनीतिक उत्थान के लिये शुभ संकेत है।

शैक्षिणक क्षेत्र में परिवर्तन

समाज में पहले महिलाओं की शैक्षिणिक स्थिति बहुत ही चिंताजनक थी महिलाएं साक्षरता की दृष्टि से पिछड़ी हुई थी। इसका मुख्य कारण शिक्षा के प्रति लोगों की परम्परागत रूढ़िवादी मानसिकता थी महिलाओं में शिक्षा को गैर जरूरी माना जाता था। शिक्षा के क्षेत्र में शासकीय उपक्रमों और योजनाओं के कारण महिला शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे है। पूर्वकालीन समाजों में धनार्जन की दिशा में योगदान देने के लिये महिलाएँ छात्रवृत्ति और मध्यान्ह भोजन तथा आवासीय परिसरों के निर्माण के कारण से शिक्षा के क्षेत्र में तीव्रता से अग्रसर हो रही है। और परिणामत वर्तमान में महिलाओं की शैक्षणिक क्षेत्र में काफी सुधार आया है, उन्हें भी शिक्षा में बराबर का अधिकार दिया जाने लगा है, स्त्रियों की साक्षरता दर में हुई प्रगति को उत्साह जनक माना जा सकता है, साक्षरता किसी भी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जिसमें महिलाओं की साक्षरता की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

स्वास्थ्य क्षेत्र मे परिर्वतन

समाज में पहले महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति बहुत ही दयनीय थी गांव की महिलाएं पहले बीमार होने पर सिरहा ,गुनिया बैगा के पास इलाज के लिए भेजी जाती थी। किन्तु वर्तमान में महिलाएं शासकीय प्रदत्त एलोफैथिक चिकित्सा सुविधाओं और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की ओर जाती दिखाई दे रही है। यह एक बड़ा परिवर्तन है कि महिलाओं का स्वास्थ्य धार्मिक कारकों व प्रभावों से मुक्त होकर वास्तविक चिकित्सा उपायों की वैकल्पिक व्यवस्था को स्वीकार कर रही है। वर्तमान में महिलाएँ गर्भावस्था के दौरान निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर नियमित परीक्षण करवा रहे है। तथा प्रसव घर में न करवाकर स्वास्थ्य केन्द्र को प्राथमिकता दे रहे है। यही कारण है कि पूर्व की अपेक्षा शिशु मृत्यु दर एवं मातृ मृत्यु दर में कमी देखने को मिल रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अब अपनी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रही है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि देश की अन्य महिलाओं की तरह से मुरिया महिलाएँ भी परिवर्तन की बयार से अछूती नहीं रही है। परम्परागत रूढ़िवादी समाजों में स्त्रियों की निम्नतम और दयनीय दशाओं की तुलना वर्तमान समाज की महिलाओं से तुलना करना उचित नहीं होगा। परिवर्तन का आशय यह है कि शासकीय योजनाओं की प्रभावशीलता सामाजिक रूढ़िवादिता और प्रतिबंधों के विरूद्ध कारगार उपाय सिद्ध हुई है। यदि लोकतांत्रिक व्यवस्था के अधीन शिक्षा आर्थिक स्वावलम्बन सक्रिय राजनीति सहभागिता जैसे क्षेत्रों में शासकीय योजनाओं को लागू नहीं किया गया होता तो स्त्रियां आज भी पूर्ववर्ती समाजों की बंदिनी होती। अतः यह उल्लेखनीय है कि शिक्षा राजनैतिक और आर्थिक स्वावलम्बन के मिले–जुले प्रभावों में स्त्रियों की मुक्ति के मार्ग प्रशस्त किये है। इनमें कोई आश्चर्य नहीं कि मुरिया महिलाएँ भी इस परिवर्तन में लाभान्वितों की श्रेणी में आ खड़ी हुई है। आशय यह है कि समाज की परम्पराओं की तुलना में लोकतांत्रिक व्यवस्था की शिक्षा राजनैतिक और आर्थिक औदार्यता तथा अनिवार्यता ने मुरिया महिलाओं के समक्ष उड़ने के लिये खुला आसमान रख छोड़ा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बोहरा, आशारानी (1988):– महिलाएं और स्वराज्य प्रकाशन नई दिल्ली।*
2. *बावे, मलिक राम (1988):– वूमन इन इस्लाम दिल्ली रेनसांचे पब्लिशिंग हॉउस।*
3. *गोयल, जयति (2013):– आज के परिवेश में नारी, कश्यप पब्लिकेशन गाजियाबाद।*
4. *ठाकुर, ओटीमाय (1949):– स्त्री समाज वाराणसी हिन्दी प्राचरक पुस्तकालय।*
5. *माधवनंद, स्वामीएण्ड रमेश चद्र मजूमदार (1933):– ग्रेट वमून आफ इण्डिया अलमोडा अदेता आश्रम।*
6. *देवी, मंजु (2015):– आपेक्षित परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो गृह मंत्रालय, नई दिल्ली।*
7. *पानिक्कर, रजनी (1970):– भारतीय नारी प्रगति के पथ पर दिल्ली नेशनल , पब्लिशिंग हॉउस।*
8. *पुर्द, एस.दास. (1979):– दी स्टेटस आफ इण्यिन वूमन नई दिल्ली ऐस ऐस पब्लिकेशन्स।*
9. *शर्मा, पी.डी. (2017):– महिला सशक्तीकरण और नारीवाद, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।*
10. *तिवारी, शालिनी:– भारतीय महिलाओं की दिशा एवं दशा/https:www.google.com*